Raj Express (Indore), 03rd August 2024, Page-04

► एक्सचेंज कार्यक्रम : यूके-इंडिया एजुकेशन एंड रिसर्च इनिशिएटिव की एक और पहल

ब्रिटेन की ख्यात यूनिवर्सिटी के छात्रों ने की मेजबानी

● इंदौर/ राज न्यूज नेटवर्क

आईआईटी इंदौर, यूनाइटेड किंगडम (यूके) के विश्वविद्यालय, यूनिवर्सिटी ऑफ प्लायमाउथ (यूओपी) के साथ एक संयुक्त अनुसंधान क्षमता निर्माण परियोजना का संचालन कर रहा है। यह भारत और ब्रिटेन के बीच अंतर्राष्ट्रीय छात्र एक्सचेंज को बढ़ावा देने के लिए स्कीम फॉर प्रमोशन ऑफ अकादमिक एंड रिसर्च कोलैबोरेशन व यूके- इंडिया एजुकेशन एंड रिसर्च इनिशिएटिव की ओर से की गई एक पहल है। आईआईटी इंदौर उन 11 विश्वविद्यालयों में से एक है जिन्हें इस परियोजना के लिए चुना गया है। यह ऐसा पहला अवसर है कि जब संस्थान स्नातक छात्रों के लिए इस स्तर पर अंतर्राष्ट्रीय एक्सचेंज कार्यक्रम आयोजित कर रहा है।

कम उम्र में शोध और प्रशिक्षण का अनुभव

प्रोफेसर चौधरी ने कहा, यह कार्यक्रम स्नातक छात्रों को कम उम्र में ही शोध और प्रशिक्षण के अंतर्राष्ट्रीय मानकों का अनुभव करने का एक शानदार अवसर प्रदान करता है। इस परियोजना से हमारे समुदाय में स्थाई परिवर्तन लाने के लिए प्रेरित कुशल कार्यबल तैयार करने पर केंद्रित अधिक छात्र एक्सचेंज कार्यक्रमों को प्रेरित करने की उम्मीद है। इस परियोजना को अत्यधिक प्रेरित और कुशल इंजीनियरों को तैयार करने के लिए डिजाइन किया गया है जो निर्माण उद्योग में जमीनी स्तर पर स्थाई परिवर्तन ला सकते हैं।

2 संकाय सदस्यों व 8 छात्रों की एक टीम

परियोजना का नेतृत्व आईआईटी इंदौर के प्रोफेसर संदीप चौधरी और यूओपी, यूके के डॉ. बेक्सुन किम संयुक्त रूप से कर रहे हैं। आईआईटी इंदौर के निदेशक प्रोफेसर सुहास जोशी ने कहा, यह परियोजना स्थाई कंक्रीट निर्माण में भविष्य के शोधकर्ताओं को प्रेरित करने पर केंद्रित है। इस परियोजना में, छात्र रीसाइक्लिंग योग का उपयोग करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सर्वोत्तम कार्यप्रणालियों को सीखेंगे और उन्हें निर्माण उद्योग में लागू करने के लिए प्रशिक्षित होंगे। इस परियोजना में, आईआईटी इंदौर के 10 छात्र और यूओपी के 10 छात्र एक महीने के अंतर्राष्ट्रीय एक्सचेंज कार्यक्रम सहित अनुसंधान प्रशिक्षण में भाग लेंगे। वर्तमान में इस परियोजना के तहत यूके से 2 संकाय सदस्यों और 8 छात्रों की एक टीम संस्थान में मौजूद है।

स्थाई समाधानों को बढ़ावा देने की कोशिश

संयुक्त अनुसंधान क्षमता निर्माण परियोजना को इस तरह से डिजाइन किया गया है कि उभरते इंजीनियरों को स्थाई निर्माण कार्यप्रणालियों में विशेषज्ञता हासिल करने के लिए प्रशिक्षित किया जा सके। जबकि भारत सरकार स्थाई समाधानों को बढ़ावा देने की कोशिश कर रही है, जैसे कि रीसाइक्लिंग योग का उपयोग, निर्माण उद्योग को अभी भी सामान्य निर्माण के लिए उन्हें अपनाने में कठिनाई हो रही है। इस धीमी गति के कारणों में से एक यह है कि वर्तमान कार्यबल में प्रासंगिक कौशल या स्थायी निर्माण कार्यप्रणालियों को अपनाने की प्रेरणा का अभाव है। कुशल और प्रेरित कार्यबल की इस कमी ने प्रोफेसर चौधरी को डॉ. किम के साथ मिलकर इस कार्यक्रम को डिजाइन करने के लिए प्रेरित किया, जो अन्य दक्षिण पूर्व एशियाई देशों में इसी तरह की अवधारणाओं पर काम कर रहे हैं।